647510 **BRS3HINF0312** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 3 (*CBCS*) Examination

July-2025 (OLD COURSE)

HINDI(FOUNDATION - 5)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न-१ ''प्रतिशोध एकांकी की कथावस्तु लिखकर उसमें व्यक्त संदेश लिखे । (१५)

अथवा

प्रश्न-१ 'पर्दे के पीछे' एकांकी में व्यक्त भ्रष्टाचार की समस्या का आलेखन कीजिए ।

प्रश्न-२ 'स्ट्राईक एकांकी की कथावस्तु लिखकर दाम्पत्य जीवन की विषमता का चित्रण कीजिए । (१५)

अथवा

प्रश्न-२ 'रीढ की हड्डी' सामाजिक विषमता को चित्रित करनेवाला एकांकी है ।-कथावस्तु लिखकर साबित कीजिए ।

प्रश्न-३ निम्नांकित में से किन्ही तीन संदर्भो की सविस्तार व्याख्या कीजिए । (१५)

१) हां मैंने बी.ए, पास किया है. कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, परंतु आपके लाडले बेटे की रीढ की हड्डी है या नहीँ- जांच कीजिए- इस संदर्भ को समजाईए ।

२) मनुष्यों के लिए उन लोगोंने अस्पताए खोल ही रखे है । इन बेचारे मूंगे पशु-पक्षियों का क्या? इस-संदर्भ को समझाईए ।

३) आप मेरे घर आना चाहती हो, तो शारदा को पूछना पडेगा, घर से मतलब है- शारदा मैं कुछ नहीं हुं शिलाजी—जो कुछ है, शारदा ही है,- इस संदर्भ को समझाईए ।

४) ये है कोंग्रेस के लोग जो मेरे समान ही- स्वार्थी और अर्थ लोलूथ है । इनके भी वैसे ही मकान, कोठी, महल, नौकर-चाकर है, फिर यह मजाल कि काम-कुछ भी नहीं- करते, व्यापार कोई नहीं करते तो क्या रुपया आकाश से टूट पडता है?

५) अनुशासन की मर्यादा पर बडे से बडे व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है ।

प्रश्न-४ 'प्रतिशोध' एकांकी के पात्र श्रीधर की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए । (१५)

अथवा

प्रश्न-४ ''रीढ की हड्डी'' एकांकी के पात्र गोपालप्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए ।

प्रश्न-५ निम्नांकित पश्नो के सूचनानुसार उत्तर लिखे । (१०)

१) रवि प्रकाशन-राजकोट से एस.वाय.बी.ए की हिंदी की किताबे मंगवाने का पत्र तैयार कीजिए ।

अथवा

प्रश्न-५ निम्नांकित परिच्छेद का हिंदी- भाषा में ही- सार लेखन कीजिए ।

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलौकिक है। उत्तर दिशामें दूर-दूर तक पर्वत श्रंखलाएँ फैली हुई है। उनकी गगन चुम्बी चोटियों पर बादल मंडराते रहते है तथा बर्फ गिरती रहती है । विविध मौसम गर्मी, शरदी, वर्षा एक ही साथ चलते रहते है। झर झर झरने प्रवाहित होते रहते है। नदियों के उदगम स्त्रोंतो की कल कब ध्वनि चलते रहते है- । विभिन्न जडी-बुटियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध है । अनेक जीव-जंतु इस पर निवास करते है, ऋषि-मुनि वहीं पर एकांत साधना में मग्न रहते है। इधर-उधर उगी हुई घास तथा देवदास आदि के लम्बे-लम्बे वृक्ष-इस प्रदेश में हरित्तिमां ज्यादा करते है। प्रात: एवं सायंकाल सूर्य, पर्वत, श्रृंगो पर स्वर्णिम गुलाबी ला, रंग विकीएण कर प्रकृति सुंदरी को सजाता है। रात्रि में चंद्रभा अपनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चांदनी से प्रकृति नारी के तन को श्रृंगारिक काया है। ओस की बुंदे उसे विविध अलंकार पहनाती है। यह सब देखकर ऐसा लगता है – मानो इस रुप में इश्वरने अपनी सुरुचि का परिचय दिया है।

****